



DAILY NEWS BULLETIN

LEADING HEALTH, POPULATION AND FAMILY WELFARE STORIES OF THE Day
Wednesday **20260506**

अध्ययन | ब्रिटिश मेडिकल जर्नल बीएमजे ग्लोबल हेल्थ में प्रकाशित शोध में किया गया दावा, हर साल 1.20 लाख मौतों को कम किया जा सकता है

भोजन सही मिले तो टीबी के मरीज मौत को मात दे पाएंगे

नई दिल्ली, एजेसी। सही खानपान के साथ टीबी से जंग आसान हो सकता है। विशेषज्ञों का मानना है कि दवा के साथ पौष्टिक आहार मिले तो मौत का खतरा काफी हद तक कम किया जा सकता है।

अमेरिकी वैज्ञानिकों ने नेशनल ट्यूबरक्यूलोसिस एलिमिनेशन प्रोग्राम (एनटीईपी) के सहयोग से किए गए अध्ययन में पाया कि 94 प्रतिशत मामलों में पीड़ितों के स्वास्थ्य की बेहतर बनाने में भोजन सहायता एक असरदार तरीका है। शोध के निष्कर्ष ब्रिटिश मेडिकल जर्नल बीएमजे ग्लोबल हेल्थ में प्रकाशित हुए हैं।

जागरूकता की कमी: अध्ययन के प्रमुख लेखक और बोस्टन

यूनिवर्सिटी में स्कूल ऑफ मेडिसिन में असिस्टेंट प्रोफेसर प्रणव सिन्हा बताते हैं कि भारत में टीबी को लेकर अभी भी जागरूकता की कमी है। शुरुआती लक्षणों की अनदेखी से यह बीमारी जानलेवा बन जाती है। इससे बचाव के लिए करीब 28 लाख लोगों को अच्छा भोजन जरूरी है। अच्छा भोजन मिले तो भारत में हर वर्ष करीब सवा लाख मौतें रोकी जा सकती हैं।

कुपोषण है सबसे बड़ा कारण: शोधकर्ताओं ने बताया कि कुपोषण ही टीबी का सबसे बड़ा कारण है। पौष्टिक भोजन नहीं मिलने से रोग प्रतिरोधक क्षमता कम हो जाती है। इसके बाद इलाज में कमी बड़ी संख्या में मौतों का कारण बनता है।



...तो बदलेगी तस्वीर: एनटीईपी की पूर्व उपाय महानिदेशक उर्वशी सिंह कहती हैं कि जब तक हम टीबी के लिए प्रभावी टीकों का इंतजार कर रहे हैं, तब तक भोजन ही वह टीका है जो

94 फीसदी मामलों में अक्सर भोजन रोग से लड़ने में असरदार

10 लाख से ज्यादा लोगों की मौत होती है हर साल बीमारी से

सबसे संक्रामक बीमारी

आंकड़े बताते हैं कि टीबी आज भी दुनिया में सबसे ज्यादा जान लेने वाली संक्रामक बीमारी है। हर साल एक करोड़ से अधिक लोग टीबी से संक्रमित होते हैं और 10 लाख से ज्यादा लोगों की मौत हो जाती है। बता दें कि पिछले 100 वर्षों में इस बीमारी के लिए कोई नया टीका विकसित नहीं हो पाया है, जो दवाइयों और किशोरों के लिए प्रभावी हो।

हमारे पास पहले से मौजूद है। प्रभावित परिवारों को पौष्टिक भोजन टीबी को खत्म करने में सबसे प्रभावशाली कदम हो सकता है। रिपोर्ट में द लैसेट जर्नल में प्रकाशित अध्ययन का भी

जिक्र है। अगस्त 2023 में प्रकाशित रिपोर्ट में बताया गया कि प्रोटीन और मल्टीविटामिन से भरपूर पोषण संबंधी सहायता ने भारत में टीबी के नए मामलों को लगभग आधा कर दिया।



WHO: Human to human hantavirus spread on ship pose low public risk

Reuters

London, Amsterdam, May 5

THE WORLD Health Organization said on Tuesday that it suspects some rare human to human transmission of the deadly hantavirus took place between very close contacts on board a cruise ship hit by seven confirmed or suspected cases.

Human to human transmission is not common, and the UN health agency reiterated that the risk to the wider public was low from a disease typically spread from contact with infected rodents.

A Dutch couple and a German national have died, while a British national was evacuated from ship and is in intensive care

in South Africa, officials said.

Two crew members require urgent medical care, the Dutch-flagged *MV Hondius* ship's operator, Oceanwide Expeditions, said. Another person on board with a suspected case has only reported a mild fever.

The Dutch foreign ministry said it was preparing the medical evacuation of three people to the Netherlands. It was not yet clear when or where the nearly 150 other people still on-board would disembark.

The cruise ship hit by the deadly outbreak is moored off Cape Verde. The island nation off West Africa was meant to be its final destination but it has not allowed the vessel to put passengers ashore because of outbreak.

✓



THE SPEAKING TREE

और पढ़ने के लिए देखें

www.speakingtree.nbt.in

स्वस्थ जीवन की पौष्टिक खुराक है ध्यान और योग

संजय तेवतिया NBT

स्वास्थ्य का अर्थ सिर्फ शरीर का ठीक होना नहीं, मानसिक और भावनात्मक संतुलन भी है। इसके लिए आध्यात्मिक जीवनशैली जरूरी है। इसका मतलब किसी धर्म विशेष से जुड़ जाना नहीं है, बल्कि भीतर की शांति, संतुलन और जागरूकता को खुद पहचानना है।

मानसिक स्वास्थ्य में ध्यान, प्रार्थना और आत्म-चिंतन की महत्वपूर्ण भूमिका है। WHO और American Psychological Association की रिपोर्ट्स बताती हैं कि नियमित ध्यान करने से तनाव, चिंता और अवसाद के लक्षणों में कमी आती है। माइंडफुलनेस मेडिटेशन पर हुए अध्ययनों में पाया गया है कि यह मस्तिष्क के उन हिस्सों को सक्रिय करता है, जो भावनात्मक संतुलन और निर्णय लेने की क्षमता से जुड़े होते हैं। साथ ही, यह कॉर्टिसोल (तनाव हार्मोन) के स्तर को कम करता है, जिससे व्यक्ति अधिक शांत और फोकस्ड रहता है।

कठोपनिषद में कहा गया है, 'उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत।' यानी उठो, जागो और श्रेष्ठ व्यक्ति के पास जाकर ज्ञान प्राप्त करो। यहां चेतना को जागृत करने का संदेश है। भगवद्गीता में भी कहा गया है, 'योगः कर्मसु कौशलम्।' यानी योग से कर्म में कुशलता आती है। हाल के वर्षों में, खासकर कोरोना महामारी के बाद, मानसिक स्वास्थ्य को लेकर जागरूकता तेजी से बढ़ी है। बढ़ते तनाव और अकेलेपन ने ध्यान व योग जैसी गतिविधियों को फिर से जीवन का हिस्सा बना दिया है।

उच्चस्तरीय समिति के प्रस्ताव को मंजूरी दी गई, जल्द लागू हो सकता है फैसला

तैयारी: कृत्रिम पनीर की बिक्री पर पूरी तरह प्रतिबंध लगेगा

विशेष

प्रियंका शर्मा
नई दिल्ली। सरकार बाजार में बिकने वाले कृत्रिम पनीर पर पूरी तरह प्रतिबंध लगाने की तैयारी कर रही है। भारतीय खाद्य सुरक्षा और मानक प्राधिकरण (एफएसएसआई) ने फैसला लिया है कि कम पोषण वाले और सेहत को नुकसान पहुंचाने वाले दिखावटी पनीर को बाजार से पूरी तरह बाहर किया जाएगा। मामले से जुड़े दो अधिकारियों ने यह जानकारी दी।

इस मामले में बनी एक उच्चस्तरीय समिति ने अक्टूबर 2025 में इस प्रस्ताव को अंतिम रूप दिया था, जिसे मार्च 2026 की बैठक में आधिकारिक मंजूरी दे दी गई है। समिति का कहना था कि भारत दुनिया का सबसे बड़ा डेयरी उत्पादक देश है, लेकिन इसके बावजूद बाजार में बड़ी मात्रा में सस्ता कृत्रिम पनीर बेचा जा रहा है। यह असली पनीर जैसा दिखता और स्वाद में मिलता-जुलता होता है, जिससे आम ग्राहक के लिए पहचान करना मुश्किल हो जाता



कीमत में भारी अंतर
अधिकारियों के अनुसार, असली ब्रांडेड पनीर की कीमत करीब 450 रुपये प्रति किलो तक होती है, जबकि खुले में बिकने वाला कृत्रिम या बिना ब्रांड वाला पनीर 250 से 300 रुपये प्रति किलो तक बिकता है।

11 अरब डॉलर के करीब पहुंच सकता है पनीर का बाजार

स्वास्थ्य पर भी खतरा बढ़ा

स्वास्थ्य विशेषज्ञों के अनुसार, कृत्रिम पनीर में प्रोटीन की मात्रा बहुत कम और फैट बहुत ज्यादा होता है। इसके नियमित सेवन से स्वास्थ्य पर गंभीर असर पड़ सकता है। इससे शरीर में इंसुलिन प्रतिरोध पैदा हो सकता है, जो टाइप-2 डायबिटीज का कारण बन सकता है।

इसलिए पड़ी जरूरत

बीते कुछ समय से बाजार में 'कृत्रिम पनीर' का चलन तेजी से बढ़ा है। यह एक सस्ता विकल्प है, जिसे ताजे दूध की बजाय मुख्यतः पाम ऑयल, मिल्क पाउडर, स्टार्च और इमल्सीफायर्स से बनाया जाता है। यह दिखने और बनावट में असली पनीर जैसा होता है, लेकिन इसकी गुणवत्ता और पोषण मूल्य दूध से बने पनीर की तुलना में काफी कम होता है। यह कृत्रिम पनीर सस्ता होने के कारण कई रेस्तरां में उपयोग किया जाता है, जिससे उपभोक्ताओं को भ्रम होता है।

लगातार बढ़ रहा बाजार

उत्तर भारत में खासतौर पर पनीर प्रोटीन का प्रमुख स्रोत माना जाता है। यही कारण है कि भारत का पनीर बाजार 10.8 अरब डॉलर तक पहुंच चुका है। मार्केट रिसर्च कंपनी आईएमएआरसी के अनुसार, वर्ष 2033 तक भारतीय पनीर बाजार के 22.1 अरब डॉलर तक पहुंचने का अनुमान है, जिसकी वार्षिक वृद्धि दर 8.7% रहने की संभावना है।

है और यह भ्रमित होता है। इसी वजह से इसे बाजार से खरणबद्ध तरीके से हटाने की योजना बनाई जा रही है। वर्तमान में कृत्रिम पनीर की बिक्री पर पूरी तरह रोक

नहीं है। देश में करीब 1,000 ऐसी कंपनियां या कारोबारी हैं, जिनके पास इसे बनाने का लाइसेंस है। नई नीति के तहत अब नए लाइसेंस जारी नहीं किए

जाएंगे और मौजूदा कंपनियों को अपना स्टॉक खत्म करने और उत्पादन बंद करने के लिए पर्याप्त समय दिया जाएगा।



चांदी 1,500 रुपये

ताइनों की बिक्री के बिहान बिटेन में निर्मित रेंज

भारत-जापान स्वास्थ्य सहयोग पर सहमत

एजेंसी

नई दिल्ली। भारत और जापान ने मंगलवार को स्वास्थ्य देखभाल के क्षेत्र में द्विपक्षीय सहयोग को और अधिक मजबूत करने की प्रतिबद्धता जताई।

केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री जेपी नड्डा ने कहा कि दोनों देशों के बीच सहयोग, स्वास्थ्य प्रणालियों को मजबूत करने, स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच में सुधार लाने तथा नवाचार को बढ़ावा देने के साझा दृष्टिकोण पर आधारित है।

नड्डा भारत और जापान के बीच स्वास्थ्य देखभाल पर तीसरी संयुक्त

समिति (जेसोएम) की बैठक में बोल रहे थे।

नई दिल्ली स्थित भारत मंडपम में आयोजित इस बैठक में दोनों देशों ने बेहतर स्वास्थ्य व्यवस्था, मजबूत चिकित्सा आपूर्ति शृंखला और डिजिटल स्वास्थ्य में सहयोग बढ़ाने पर जोर दिया। इस बैठक की सह-अध्यक्षता नड्डा और जापान की स्वास्थ्य नीति मंत्री किमी ओनोदा ने की। नड्डा ने कहा कि यह बैठक दोनों देशों की साझा प्रतिबद्धता को दर्शाती है, जिसमें स्वास्थ्य सेवाओं की पहुंच बढ़ाने, स्वास्थ्य तंत्र मजबूत करने और नवाचार को बढ़ावा देने पर ध्यान दिया जा रहा है।

केंद्रीय मंत्री नड्डा की मौजूदगी में भारत मंडपम में आयोजित हुई बैठक

यह संबंध विभिन्न क्षेत्रों में एक सदी से अधिक के जुड़ाव पर आधारित है और उन्होंने सबका साथ, सबका विकास के मार्गदर्शक सिद्धांत के तहत समावेशी विकास के प्रति भारत की प्रतिबद्धता को दोहराया।

जापान की मंत्री किमी ओनोदा ने भी कहा कि उनका देश तकनीक, शोध और नवाचार के माध्यम से भारत के साथ सहयोग को और आगे बढ़ाने के लिए तैयार है। बैठक में गैर-संचारी रोगों, चिकित्सा आपूर्ति,

डिजिटल स्वास्थ्य और मानव संसाधन विकास जैसे प्रमुख मुद्दों पर विस्तार से चर्चा हुई। भारत ने अपनी दवा और चिकित्सा उपकरण निर्माण क्षमता पर जोर देते हुए सस्ती और सुलभ स्वास्थ्य सेवाएं सुनिश्चित करने के प्रयासों को साझा किया।

वहीं, जापान ने सार्वजनिक और निजी क्षेत्र के सहयोग से मजबूत आपूर्ति व्यवस्था का अपना मॉडल प्रस्तुत किया। मानव संसाधन विकास के तहत दोनों देशों ने स्वास्थ्य कर्मियों के प्रशिक्षण, आदान-प्रदान और संयुक्त शोध कार्यक्रमों को बढ़ाने पर सहमति जताई।

नवजात के दिल की हुई सफल सर्जरी

अखरोट के आकार की था
नवजात का दिल

नई दिल्ली। दिल्ली के निजी अस्पताल ने एक नवजात के अखरोट आकार के दिल की ओपन हार्ट सर्जरी कर डॉक्टरों ने नई ज़िंदगी दी है।

जन्म लेने के 24 घंटे के अंदर डॉक्टरों ने नवजात की सर्जरी कर जान बचाई है। नवजात को जन्मजात दुर्लभ इन्फ़ाडायफ़्रैगमेंटिक टोटल एनोमलस पल्मोनरी वीनस कनेक्शन (टीएपीवीसी) हृदय की बीमारी थी। नवजात को जन्म लेने के बाद ओखला स्थित निजी अस्पताल में उपचार के

लिए लाया गया। अस्पताल में पीडियाट्रिक एवं कंजेनाइटल हार्ट सर्जरी के प्रमुख डॉ. के एस अय्यर और पीडियाट्रिक कार्डियोलॉजी विभाग के प्रमुख डॉ. आशुतोष मारवाह के नेतृत्व में डॉक्टरों की टीम ने सर्जरी को अंजाम दिया।

चार घंटे तक चली सर्जरी में नवजात की ओपन हार्ट सर्जरी की गई।

इसमें ऑक्सीजन से भरपूर रक्तप्रवाह को हृदय के बायीं ओर भेजा गया। डॉ. केएस अय्यर ने बताया कि नवजात की बीमारी के बारे में गर्भावस्था के छठे हफ्ते में रूटीन एंटीनेटल अल्ट्रासाउंड के दौरान पता चला। फिर इसकी पुष्टि फीटल इकोकार्डियोग्राफी में हुई। यह सर्जरी काफी चुनौतीपूर्ण थी। दिल का आकार अखरोट के आकार की तरह था। इस सर्जरी टीम में डॉ. पार्वती अय्यर और डॉ. विक्रम अग्रवाल भी शामिल रहे। ब्यूरो

TERMINATION OF TEEN'S 30-WEEK PREGNANCY

The infant, born with disabilities, has 80% survival rate: AIIMS to SC

The Indian Express

Express News Service
New Delhi, May 5

THE SUPREME Court on Monday dropped contempt of court proceedings against AIIMS Delhi after the hospital confirmed it had complied with directions to medically terminate the 30-week pregnancy of a 15-year-old girl.

Appearing for AIIMS, Additional Solicitor General (ASG) Aishwarya Bhati informed a bench of Justices B V Nagarathna and Ujjal Bhuyan that the medical termination of pregnancy resulted in the birth of a baby boy. The ASG reported that the infant, born with certain disabilities, has 80% survival rate and is in the neonatal intensive care unit (NICU).

The contempt petition was originally filed by the minor's mother, alleging that AIIMS had failed to comply with an April 24

court order authorising the termination. AIIMS initially hesitated, seeking a review and later filed a curative petition, both of which were dismissed. The institute argued that at 30 weeks, the procedure carried a high risk of the child being born alive with congenital disabilities, and suggested allowing the foetus a few more weeks to grow to ensure a healthy delivery for adoption.

However, the SC emphasised that forcing the minor to carry an "unwanted pregnancy" to term would violate her fundamental right to reproductive autonomy under Article 21 of the Constitution and issued a contempt notice. On Monday, Justice Nagarathna admitted the difficulty of the situation. "It's not easy for us here. There is nobody who is winning, nobody is losing this. But then we have to take a decision without emotion. I hope it doesn't come to

this again in the sense that we don't want any more unwanted pregnancies coming for termination," the judge said.

Explaining why it asked AIIMS to carry out the procedure, she said that without that, the women would depend on unqualified practitioners or quacks risking their lives.

Justice Nagarathna flagged a societal trend related to the rise of unwanted pregnancies among minors. She noted that by the time families come to know and overcome the shock to make a decision, the term often reaches the seven-month mark, creating a legal and medical crisis. "The shock of the girl who is not married and is a minor having become pregnant, and the decision of the family on what to do... This is a mischief. Either a lacuna in the law and tendency in the society. Somebody has to answer it," she said.

एंटीबायोटिक दवाओं को बेअसर कर रहा सीवेज!

दिल्ली, मुंबई, चेन्नै और कोलकाता के सीवेज पर की गई रिसर्च में हुआ खुलासा

■ NBT रिपोर्ट, नई दिल्ली

भारतीय शहरों का गंदा पानी अब सिर्फ प्रदूषण की समस्या नहीं रह गया। यह एंटीबायोटिक दवाओं के खिलाफ बढ़ते प्रतिरोध का स्रोत भी बन रहा है। यानी सीवेज अब एंटीबायोटिक दवाओं को बेअसर करने का जरिया बन रहा है। दिल्ली, मुंबई, चेन्नै और कोलकाता के सीवेज पर किए गए एक अध्ययन में यह दावा किया गया है। इसमें कहा गया है कि सीवेज में ऐसे जीन मौजूद हैं जो बैक्टीरिया को दवाओं के खिलाफ अधिक मजबूत बना रहे हैं। यह रिसर्च

सीवेज में मौजूद जीन बैक्टीरिया को दवाओं के खिलाफ मजबूत बना रहे

स्क्रिप्सआईआर के सेंटर फॉर सेल्युलर एंड मॉलिक्यूलर बायोलॉजी, नैशनल एनवायरमेंटल इंजीनियरिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट और अन्य संस्थानों के वैज्ञानिकों ने की है। इसे अप्रैल 2026

में जारी किया गया है। रिसर्च में 2022 से 2024 के बीच 19 स्थानों से 447 सीवेज सैम्पलों की जांच की गई। इसमें हर शहर में बैक्टीरिया की संरचना अलग-अलग मिली।



AI Image

एंटीबायोटिक प्रतिरोधी जीन सभी जगह मिले

रिसर्च में पता चला कि एंटीबायोटिक प्रतिरोधी जीन सभी शहरों में समान रूप से फैले हुए हैं। इसमें 53 से 70 प्रतिशत सूक्ष्मजीव ऐसे हैं, जिन्हें पहले कभी पहचाना ही नहीं गया। वैज्ञानिकों ने चेतावनी दी है कि ये प्रतिरोधी जीन तेजी से फैल सकते हैं। इससे दवा प्रतिरोधी संक्रमण का खतरा बढ़ता जा रहा है।